



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 36]

नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 28, 2006/माघ 8, 1927

No. 36]

NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 28, 2006/MAGHA 8, 1927

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

(भारतीय रिजर्व बैंक)

(विदेशी मुद्रा विभाग)

(केन्द्रीय कार्यालय)

शुद्धि-पत्र

मुम्बई, 18 जनवरी, 2006

सा.का.नि. 41(अ).—भारतीय रिजर्व बैंक, विदेशी मुद्रा विभाग, केन्द्रीय कार्यालय द्वारा जारी और फरवरी 9, 2005 के सा.का.नि. 60(अ) द्वारा भारत के राजपत्र असाधारण, भाग II, खण्ड 3, उप-खण्ड (i) में प्रकाशित विदेशी मुद्रा प्रबंध (विदेशी मुद्रा में उधार लेना अथवा देना) (संशोधन) विनियमावली, 2005 (जनवरी 5, 2005 की अधिसूचना सं. फेमा. 127/2005-आरबी) में “पाद टिप्पणी” में मद सं. 1 के लिए निम्नलिखित पाद टिप्पणी को प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“1. यह स्पष्ट किया जाता है कि इन नियमों के पूर्वव्यापी प्रभाव से कोई भी व्यक्ति प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं होगा”

[सं. फा. 1/23/ई एम/2000-खण्ड IV]

विनय बैजल, मुख्य महाप्रबन्धक

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

(RESERVE BANK OF INDIA)

(Foreign Exchange Department)

(Central Office)

CORRIGENDUM

Mumbai, the 18th January, 2006

G.S.R. 41(E).—In the Foreign Exchange Management (Borrowing or Lending in Foreign Exchange) (Amendment) Regulations, 2005 (Notification No. FEMA 127/2005-RB dated January 5, 2005) issued by the Reserve Bank of India, Foreign Exchange Department, Central Office and published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i) *vide* G.S.R. 60(E) dated February 9, 2005, for item No. 1 in “Foot Note” the following foot note shall be substituted, namely :—

“1. It is clarified that no person will be adversely affected as a result of the retrospective effect being given to these regulations”

[No. F. 1/23/EM/2000-Vol. IV]

VINAY BAIJAL, Chief General Manager